श्रीः

ग्रंथकर्ता के गुरुवर्य शान्तमूर्ति
मुनिराज श्री त्रैलोक्यसागरजी.

जन्म वीरात् २३९९ दीक्षा वीरात् २४२२.

The Bombay Art Printing Works

ॐ

॥ सद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥

समर्पणपत्रिका

श्री श्री श्री १००८ श्री श्री शान्त, दान्त, महन्त, बड़भागी सौभाग्यादि गुणगणालंकृत पूज्य परमपूज्य श्रीमान् गुरुवर्य श्री त्रैलोक्यसागरजी महाराजकी परम पवित्र सेवामें-

आपने इस दासको शुभमिती वैशाष शुक्ल १२ बुद्धवार वीर सम्वत् २४३७ वि० सं० १९६८ को शुभ मुहूर्त्तके अन्दर महान् दुःखके दाता गृहस्थाश्रमसे मुक्तकर संयमरूपी नौकामें स्थान प्रदान किया है, अर्थात् अपनी निर्मल सेवामें शरण दिया है; इस अनहद उपकारको मैं कभी नहीं भूल सकता ।

हे पूज्य गुरुवर्य ! आप जैसे योग्य मुनिराज भव्य जीवों को ज्ञान देकर कृतार्थ करते है, आपका शान्त गुण त्रैलोक्यमें प्रकाश कर रहा है अपकी संयमकी रुप अलौलिक देखकर कौन आश्चर्यको प्राप्त नहीं होता होगा ।

इसही लिये हे गुरुवर्य ! आपके उपरोक्त गुणको स्मरण कर तथा अनहद उपकारको मानकर यह लघु पुस्तक आपके चरण कमलोंमें समर्पण करता हूं सो कृपया स्वीकार करें ।

आपके पदपंकजका-दास

आनन्दसागर

मु० कोटा—राजपुताना.

The Bombay Art Printing Works, Fort.

ॐ

॥ श्रीजिनदत्तकुशलगुरुभ्यो नमः ॥

भूमिका

सज्जनोः—

आप यह बात अच्छी तरहसे जानते होंगे कि इस पारावार संसारमें मग्न होकर प्राणी अनन्ताभव भ्रमण करता है। इस वक्त तो विषय वासनामें ग्रस्त हुए रहनेसे उसे कुछ भी भान नहीं होता मगर पीछे दुर्गत्यादिमें जाकर अत्यन्त खेद करना पड़ता है जैसे दाद या खुजलीकी बीमारीवालेको खुजली खुनती वक्त तो कुछ भी मालूम नहीं होता परन्तु पीछेसे जलन होनेपर अपने किये हुवे कार्यका पश्चाताप करना पड़ता है।

इस पर कोई प्रश्न करे कि इस संसार समुद्रसे पार होनेका कोई सहल उपाय है क्या कि जिसको हासिल करके मनुष्य शीघ्र पार होजावे।

(उत्तर) जीहां; इसही लिये तो हमारे कृपालु, परोपकारी बुद्धिमन्त, विचक्षण, मुनिराज श्रीआनन्दसागरजीने इस "सप्तव्यसननिषेध नामक" लघु ग्रन्थकी रचना की है

आपने इसमें सातों व्यसनोंको स्पष्ट तौरपर बयान किया है कि जिनको मनुष्य त्यागकर अचिरात् मोक्षको प्राप्त होजाता है।

एक २ व्यसनकी व्याख्या ऐसे स्पष्ट तौरपर की गई है कि अल्पज्ञ भी अच्छी तरहसे समझ जा सकता है।

इसके अन्तमे आपका बनाया हुआ श्रीदादा साहबका स्तवन भी छपवाया गया है. अन्तमें मैं उक्त मुनिराजको सहस्र बार धन्यवाद देकर आप--सर्व सज्जनोंको सविनय निवेदन करता हूं कि कृपया इसको वारम्बार मननता पूर्वक पढ़ें।

इसमें कोई दृष्टिदोषसे अशुद्धियें रहगई हों तो कृपया सुधारकर पढ़ें।

आपका हितैषी—

प्रकटकर्त्ता.

पुस्तक प्रकाशक

रायसाहिब सेठ केशरीसिंहजी पवार (कोटावाले,)

बेन्कर एन्ड ऑनररी गवर्मेन्ट ट्रेझरर, रतलाम.

The Bombay Art Printing Works, Fort

॥ श्री ॥

द्वितियावृत्तिकी भूमिका।

पाठकगणो.

इस सप्तव्यसनं निषेध नामक लघु ग्रंथको जबसे मैनें पढ़ा है मुझे अनुभव होगया कि यह ग्रंथ सर्व लोगोंको अत्यन्त फायदे मंद है. इस ग्रंथको बनाकर मेरे परमोपकारी गुरुवर्य-शान्त मूर्त्ति श्री त्रैलोक्य सागरजी महाराजके विचक्षण शिष्य श्रीआनद सागरजी महाराजाने आम लोगों पर महत् उपगार किया है.

प्रथमावृत्तिमें जो अशुद्धियें छापेकी रह गई थीं वे उक्तग्रंथ कर्त्ताने शोधनकी हैं. तथा आपहीने कितनेक विषयोंको बढ़ा कर बहुतही स्पष्टीकरण किया है.

इस अनुपम ग्रंथको पढ़कर मेरी इच्छा हुई कि यह ग्रंथ यदि हिन्दी जैनके उपहारके साथ २ भेट दिया जाय तो बेहतर होगा ऐसा विचारकर इस सालके ३ पुस्तकोंके साथ २ यह भी मेरे प्रेमी पाठकोंको भेट दीगई

इसमें गुरुवर्य श्रीत्रैलोक्य सागरजी तथा श्रीआनंदसागर-जीका फोटो दिया गया है. श्रीदादा सा० के स्तवनके पहिले एक सप्तव्यसनकी सज्झायभी रक्खी गई है.

यदि इस पुस्तकमें दृष्टि दोषसे अथवा छापेके दोषसे गलतियें रह गई हों तो पाठक सुधार कर पढ़ें इति.

श्रीसंघकादास.

केसरीसिंह सेठ.

रायसाहब.

वीरात् २४३९ वीर स. १९६९ मु. कोटा. राजपुताना	}	बैंकर और आनररी गव्हरमेन्ट ट्रेझरर.

॥ श्रीजिनाय ॥

॥ श्रीजिनदत्त कुशल गुरुभ्यो नमः ॥

॥ मंगलाचर्णम् ॥

सकलकुशलवल्ली पुष्करावर्त्तमेघो ।
दुरित तिमिरभानुः कल्प वृक्षोपमानः ॥
भवजल निधिपोतः सर्व सम्पत्ति हेतुः ।
स भवतु सततं व श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥ १ ॥

अर्थः—(स श्रीपार्श्व देवः वः सततं श्रेयसे भवतु वे परम उपकारी श्रीपार्श्वनाथ स्वामी हमेशां तुमको कल्याण के करनेवाले होवो, (कथं भूतः सदेवः) कैसे हैं वे पार्श्व-नाथ प्रभुः (सकल कुशल वल्ली) समस्त कुशलें की वेलरूप जैसे वेल फल फूलकी दाता है वैसेही आप भवोभवमें कल्याणको करनेवाले हैं (पुनः कथंभूत. सदेवः) फिर

कैसे हैं वे पार्श्वनाथ स्वामी (पुष्करावर्त्त मेघो) पुष्करावर्त्त मेघके समान, जैसे अवसार्पिणीके प्रथम आरेमें और उत्तसर्पिणीके षष्ठम आरेमें एक वक्त पुष्करावर्त्त मेघवर्षनेसे १०००० वर्षतक पृथ्वीका तेह रहता है यानी इस मुद्दततक वगैर वर्षातके सर्व वस्तुओंकी प्राप्ति होती है; इसी प्रकार इन प्रभुका एक वार स्मरण करनेसे भवोभवमें सद्मार्गरूपी फलकी प्राप्ति होती है. (कथं भूतः सदेवः) फिर कैसे हैं वे नाथ (दुरित तिमिर भानुः) अन्धकारको दूर करनेमें सूर्य समान. जैसे सूर्य रात्रिके अन्धकारको दूर कर देता है, वैसेही आप अनादि कालके मिथ्यात्वको दूर करनेवाले हैं (पुनःकथ भूतः संदेवः) फिर कैसे है वे पार्श्व प्रभु (कल्प वृक्षोपमानः) कल्प वृक्षके समान; जैसे कल्पवृक्ष अवसार्पिणीके प्रथम आरेसे तृतीय तक और उत्सर्पिणीके चौथेसे छठे तक नाना प्रकारके फल देते हैं; वैसेही ये प्रभु मनोवांछित फलको देनेवाले हैं.

अवसरको पाकर यहां पर कल्प वृक्षके नाम व गुणों को बताता हूँ.
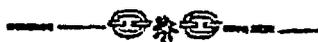
नम्बर	नाम कल्प वृक्ष	गुण
१	मत्तंग	मधु समान मृदु पानी देवे.
२	भगारा	सोने चांदीके भोजन देवे.
३	त्रुटी	बत्तीस प्रकारके नाटक देवे.
४	सूर्य	सूर्य समान प्रकाश देवे.
५	दीपक	दीपकके समान प्रकाश देवे.
६	चित्ताग	छओं ऋतुओंमें पाचोंवर्णों के पुष्पदेवे
७	चित्तरसा	नाना प्रकारके भोजन देवे.
८	आभरण	आभूषण देवे.
९	गेह	गृह देवे.
१०	वत्थ	वस्त्र देवे.

(पुनः कथंभूतः सदेवः) फिर कैसे है वे त्रैलोक्यनाथ (भव जलनिधि पोतः) समुद्रसे पार करनेमें नौका (नाव) समान, जैसे नौका समुद्रसे पार कर देती है, अर्थात् तिरा देती है वैसेही इन प्रभुकी भक्तिसे अथाह संसाररूपी समुद्रसे पार होजाते हैं।

एक वक्त श्रीगौतम स्वामीने दोनों कर जोड़ सविनय श्री-वीर परमात्मासे प्रार्थना की कि हे प्रभो ! इस संसारको समुद्रकी उपमा क्यों दीजाती है ? क्या इसमें समुद्रकासा दृश्य-पना है; इस विषयमें निम्नलिखित प्रश्नोत्तर हुए।

१ प्रश्न—हे प्रभो ! समुद्रमें तो जल (Water) है, इस संसाररूपी समुद्रमें कौनसा जल है ?

उत्तर—हे गौतम ! जन्म मरण रूप जल है, जैसे जलका आवागमन होता है, वैसेही जन्म मरणका स्वभाव है।

२ प्रश्न—हे नाथ ! समुद्रमें तो कीचड़ (Mud) होता है, इस संसाररूपी समुद्रमें कौनसा कीचड़ है ?

उत्तर—हे गौतम ! काम भोगरूपी कीचड़ है, जैसे कीचड़का स्वभाव फसावटका है वैसेही काम भोगका जानना।

३ प्रश्न—हे स्वामी ! समुद्रमें तो खड्ढ (Pits) होते हैं इस संसाररूपी समुद्रमें कौनसे खड्ढ है ?

उत्तर—हे गौतम ! तृष्णारूपी खड्ढ हैं, जैसे खड्ढका स्वभाव गहरेपनका होता है, वैसेही तृष्णाका जानना।

४ प्रश्न—हे देवाधिदेव ! समुद्रमें तो तरंगे (Waves) उठती हैं, इस संसाररूपी समुद्रमें कौनसी तरंग है; ?

उत्तर—हे गौतम ! अहंकाररूपी तरंगे हैं, जैसे तरंगे उछलती हैं, इसी प्रकार अहंकारी पुरुषका चित्त उछलता हुआ रहता है ।

५ प्रश्न—हे त्रैलोक्य पूज्य ! समुद्रमें तो मगर मच्छादि (Crocodile) महा भयानक जानवर होते हैं, इस संसार-रूपी समुद्रमें कौनसे जानवर हैं ?

उत्तर—हे गौतम ! दुष्ट मनुष्यरूपी मगर मच्छादि हैं, जैसे मगर मच्छादि भयानक जानवर निरपराधि जीवोंको भक्षण कर जातेहैं वैसेही दुष्ट लोग निरपराधि जीवोंको तकलीफ पहुँचाते हैं ।

६ प्रश्न—हे सर्वज्ञ प्रभु ? समुद्रमें तो मछलियें (Fishes) वगैरा अनेक छोटे २ जानवर होते हैं इस संसाररूपी समुद्रमें कौनसे जानवर हैं ?

उत्तर—हे गौतम ! कुटुम्ब परिवाररूप छोटे २ जानवर हैं जैसे ये जानवर जलमें स्थिर रहे हुवे प्राणीके शरीरको चूंट चूंट खाते हैं वैसेही कुटुम्ब परिवार नाना प्रकारके दुःख देते हैं ।

७ प्रश्न—हे वीतराग देव ! समुद्रमें तो चट्टाने (Rocks) होती हैं, इस संसाररूपी समुद्रमें कौनसी चट्टानें है ?

उत्तर—हे गौतम ! अष्टकर्मरूपी चट्टाने हैं जैसे चट्टाने चलती नावको रोक देतीहै, उसी प्रकार चेतनको मोक्ष मार्गमें प्रवर्तते हुए अष्टकर्म रोक देते हैं ।

८ प्रश्न—हे जिनेश्वर ! समुद्रमें तो भवरियें (Wherlings) होते है, इस संसाररूपी समुद्रमें कौनसी भवरियें है ?

उत्तर—हे गौतम ! दगाबाजीरूपी भवरियें है जैसे भवरियें चक्कर मारती हैं, वैसेही दगलबाज अपनी कपट रचनामें चक्कर मारा करता है।

९ प्रश्न—हे त्रैलोक्य तिलक ! समुद्रमें तो मोती, माणक, रत्नादि जवाहिरात (Jewells) होते है, इस संसाररूपी समुद्रमें कौनसे जवाहिरात हैं ?

उत्तर—हे गौतम ! चतुर्विधसंघ (साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका) रूप जवाहिरात हैं, जैसे सारे समुद्रमें जवाहिरात उत्तम चीजें हैं वैसेही इस संसारमें यह चार वर्ग उत्तम हैं।

१० प्रश्न—हे त्रैलोक्यनाथ ! समुद्रमें तो कंजी (Moss) होती है, इस संसाररूपी सद्रमुमें कौनसी कांजी है ?

उत्तर—हे गौतम ! लोभ रूपी कंजी है; जैसे कंजीपर पैर रखनेसे रपट जाता है, उसी प्रकार लोभी प्राणी स्थान २ पर धोखा खाता है।

११ प्रश्न—हे जगदीश ! समुद्रमें तो वडवानल अग्नि होती है, इस संसाररूपी समुद्रमें कौनसी अग्नि है ?

उत्तर—हे गौतम ! क्रोधरूपी अग्नि है, जैसे अग्नि हर एक चीजको जला देती है, वैसेही क्रोध शुभ कार्यको नष्ट कर देता है और अज्ञान दशामें प्रवृत्त कर देता है।

१२ प्रश्न–हे भवतारण ! समुद्रके तो तट (Shore) होता है, इस संसाररूपी समुद्रका कौन सा तट है ?

उत्तर–हे गौतम ? मोक्षरूपी तट जानना जैसे प्राणी बड़े २ संकट उठा उठाकर समुद्रसे पार होकर सुखी होते हैं वैसेही महा दुःखके भोगी इस संसारसे पार होकर मोक्ष (Solvation) में प्राप्त होजाते हैं।

इस प्रकार कई एक प्रश्नोत्तर हुवे।

(पुनः कथं भूतः स देवः) फिर कैसे हैं वे प्रभु (सर्व सम्पात्ति हेतु) मोक्षरूपी सर्व सम्पत्तिको देनेवाले हैं।

प्रथमही प्रथम मांगालिकके वास्ते श्रीवीतराग प्रभुको नमस्कार किया गया।

साथके साथ श्रीगुरू महाराजका स्मरण करना भी उचित समझता हूँ, कारण कि यावत गुरू महाराजकी कृपा न हो कोई कार्य सफलताको प्राप्त नहीं होसक्ता।

प्रथम स्वर्गस्थजैनाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्रीमद् सुखसागरजी महाराजको सविनय नमस्कार करताहूं जिनकी कि वदौलत इस सिंघाडेमें आनन्द मंगल वर्त्त रहे हैं और सर्व साधु साध्वी चौतरफा जैन धर्मका झंडा निडर फहराते हुए अपनी आत्माका कल्याण करनेमें कटिवद्ध हैं।

तत्पश्चात् स्वर्गस्थ पटधर श्रीभगवानसागरजी महाराजको जिन्होंने कि चतुर्विध संघपर अपने ज्ञानकी अपूर्व दृष्टिकी और अन्तमें ५२ उपवास करके अपनी आत्माका कल्याण किया।

तत्पश्चात् विद्यमान पटधर तथा गुरु महाराज श्रीत्रैलोक्य सागरजी महाराजको नमस्कार करके प्रार्थना करता हूं कि धन्य हो आपको कि आप अहर्निश ज्ञानाभ्यास करके अपने ज्ञानावरणीय कर्मको क्षय करते हैं तथा बाल जीवोंको ज्ञान दान देकर उन्हें कृतार्थ करते हैं साधु, साध्वी. श्रावक श्राविका आदि सर्वही (जो कि आपकी कृपारूपी कल्पवृक्षकी छायामें निवास करते हैं) आपके अतुल उपकारको कभी नहीं भूल सकते । कहांतक तारीफ की जाय आपका उपकार बुद्धि अवर्णनीय है, आपकी शान्त मुद्राके दर्शन करके कौन ऐसा होगा कि जो शान्तताको प्राप्त न हो, इस दास पर जैसा अनुग्रह है उससे दिन दूना और रात चौगुना बढ़ावे ।

आपको यह भली प्रकार विदित है कि जब कोई कार्य किया जाता है तब प्रथम महानुभावोंका स्मरण किया जाता है ताकि वह कार्य आद्योपान्त सानन्द निर्विघ्नतासे प्राप्त हो

अब मैं अपने खास विषय (Subject) पर झुकता हूं, सभ्यगण इसको ध्यान पूर्वक पढ़ें ।

यह विषय यद्यपि बहुत गहन है, तदपि गुरु महाराजके कृपाका अवलंबन लेकर किंचित् मात्र दिखाता हूं आगे (पूर्व काल) भी बड़े २ आचार्योंने ग्रंथ बनाए उनमें महानुभा-

वोंका सहारा (Shelter) लिया है, देखिये मानतुंगाचार्य महाराज अपने वनाए हुए भक्तामरस्तोत्रके षष्टम श्लोकमें फरमाते हैं—

अल्पश्रुतं श्रुतवतां, परिहासधाम ।
त्वद्भक्ति रेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥
यत्कोकिलः किलमधौ मधुरं विरौति ।
तच्चारु चाम्रकलिका निकरैकहेतु ॥ १ ॥

अर्थ--हे प्रभो ! मैं थोड़ा तो पढ़ा हुआ हूं और विद्वज्जनोंके समक्ष हास्यका स्थान हूं, मगर तो भी आपकी भक्तिही इस स्तोत्रकी रचना करनेमें मुझे वाचाल करती है, यथा वसन्तऋतुमें कोयल मधुर स्वरसे वोलती है वहांपर निश्चय करके आमकी कलियोंका समूहही हेतु भूत है ।

अव मैं अपने विषयकी व्याख्या आरम्भ करता हूं, मगर इसके प्रथम सातों व्यसनोंके नाम लिखनेका प्रयत्न करता हूं

द्यूतंच मासंच सुराच वेश्या ।
पातर्द्धिचौरी परदार सेवा ॥
एतानि सप्त व्यसनानि लोके ।
घोरातिघोरंनरकं ददन्ति ॥ १ ॥

अर्थ-जुँआका खेलना, मांसका खाना, मदिरका पीना, वेश्याका भोगना, शिकारका खेलना, चोरीका करना. परस्त्रीका गमन

करना, ये सप्त व्यसन जो प्राणी सेवन करता है वह घोरातिं घोर नर्कको प्राप्त होता है।

यहांपर कोई प्रश्न करता है कि इन सातों व्यसनोंके अन्दर प्रथम व्यसनमें जूआकोही क्यों फरमाया ? क्या श्लोकके कर्त्ता पुरुषकी मरजीही कारण है या अन्य ?

उत्तरमें मालूम हो कि कई एक श्लोक दोहे, चौपाइयें कवित्त, छन्द, सोरठे, स्तवन, सभायें स्तोत्र, स्तुतियें चैत्य वन्दनादिमें हरएक वात आगे पीछे अकारग्राही कर्ता पुरुष अपनी इच्छानुसार रख देता है तथा कारण पाकरभी रखता है तो भो प्रश्नकर्ता ! यहां पर "जूआ" नामक व्यसन प्रथमही प्रथम फरमाया उसमें किंचित् कारण है वह यह है कि इस एक व्यसनसे सातोंकी प्राप्ति होती है, इसपर एक दृष्टांत लिख दिखाता हूं।

किसी एक ग्रामका राजा वड़ाही जूआरी था, एक समय ऐसा हुआ कि वह अपनी सर्व सम्पति हार गया, यहांतक कि उसके नौकरोंको वेतन तक देना कठिन होगया, नहीं २ इतनाही नहीं वल्कि खाने तकको मुश्किल वीतने लगी तब अन्याय करना आरम्भ किया।

अपने नौकरोंको यह आज्ञा दी कि गांवमें जहां२ द्रव्य हो लूट लावो।

नौकर लोग आज्ञाको पाकर सेठ साहूकार और सवही द्रव्यवान्के मकानपर पहुंचे. उनकी स्त्रियोंके पाससे सर्व जेवर (Ornoments) छीनने लगे जो स्त्रियें न देने लगीं उनकी

बड़ी दुर्दशा की और सर्वमाल असबाब लूटने लगे, इस तरह प्रजा बड़ी दुखित होगई।

जब राजाही ऐसा अकृत्य करने लग जावे तो विचारी रय्यत किसका शरण लेवे, देखिये कहा है—(Subject)

यदि पिता सन्तापितः शिशुर्मातुः शरण गच्छति, यदि माता सन्तापितः पितुः शरणं गच्छति, यदि उभाभ्यां सन्तापितो महाजनानां शरण गच्छति, यदि त्रिभिः सन्तापितो राजाग्रे गच्छति परं यदि राजापि अन्यायं करोति तदा कस्याग्रे कथ्यते।

अर्थ—यदि पिता लड़केको दुःख दे तो माताकी शरण जाता है, माता दुःखदे तो पिताकी शरण जाता है, दोनों दुःखदें तो महाजनोंकी शरण जाता है, और तीनों दुःखदें तो राजाकी शरण जाता है। मगर अगर राजाही अन्याय करे तो किसको कहें।

अहा शुभकर्मानुयोगसे इस अवसरमें एक जैनाचार्यका पदार्पण हुआ।

आप स्वामीको सर्व प्रजाने अपना दुःख निवेदन किया सुनतेही करुणालय मुनि महाराजने यह अभिग्रह धारण किया कि मैं तवहीं अन्नजल ग्रहण करूंगा जब इन लोगोंका दुःख शमन हो जाय।

आप जानते है कि जैन मुनिके अन्दर स्वाभाविकही करुणा होती है कारण कि उनके असूल (Puties) ही ऐसे रक्खे गए हैं कि जिससे कठोर हृदय होनाही सम्भव नहीं, हां

अलवत्ता निर्दय हृदय उस हालतमें हो सकता कि जब वे अपने कर्तव्योंसे विरुद्ध चलें।

उन महानुभावने विचार किया कि वगैर कोई कपट रचना किये यह कार्य बनना कठिन है और कपट रचना जैन मुनिका कर्तव्य नहीं अब क्या करना चाहिये।

विचार शक्तिसे यह मालूम हुआ कि "जैन मजहबकी स्याद्वाद शैली है" हरएक वस्तु सापेक्ष सिद्ध है एकान्त कोई बात नहीं।

कपट दो प्रकारका होता है एक द्रव्य कपट दूसरा भाव कपट, द्रव्य कपट उसे कहते हैं जिससे कर्म बन्धन न हो केवल नाम मात्रका कपट हो, भाव कपट उसे कहते हैं जिससे कर्मका बन्धन होकर महान दुःख उठाना पड़े।

बस तो मुझको यहांपर द्रव्य कपट रचनेसे कोई बाधा नहीं केवल परोपकारके निमित्त करता हूं ऐसा विचारकर निम्न लिखित अद्भुत घटना की।

वे मुनीश्वर मछलिये पकडनेकी जाल (Net) शिरपर धारण करके श्मशान भूमिमें प्राप्तहुए वहां ग्रामके सर्व लोग दर्शनार्थ आने लगे, बहुतसे लोगोंने राजासे अर्जकी कि हे स्वामिन्! श्मशान भूमिमें एक कोई महात्मा कायोत्सर्गमें खड़े हैं, न बोलते हैं, न चलते हैं न सोते हैं, न बैठते हैं, न खाते हैं, न पीते हैं, न हिलते हैं, आदि कोई कार्य नहीं करते राजा इस प्रकार श्रवण करके मुनीश्वरके दर्शनार्थ श्मशान भूमिमें प्राप्त हुआ, देखता क्या है हजारों आलिम झुक

हुए है और आप मुनि महाराज कायोत्सर्गध्यानमें लीन हैं।

इस हालतको देखकर राजा बड़ा आश्चर्यको प्राप्त हुआ कि उफ ! ऐसे महात्मा होते हुए यह जाल शिरपर क्यों धारण की है, क्या कोई कपड़ा तो नहीं है ? ऐसा विचारकर राजा (King) ने मुनि महाराज (Monr) को सविनय प्रश्न किये वे प्रश्न तथा मुनीश्वरके उत्तर एक कवित्तमें लिख दिखता हूं।

कवित्त।

स्वामिन यह कथा, नहीं मछली मारेको जाल है।
खेले हू शिकार आप, मांस चाह भायते॥
मांसहू भखे हैं आप, जब सुराकी खुमारि होय।
सुराहू पिवे हैं आप, वेश्या संग जायते॥
वेश्याहू प्रसंग करे, परस्त्री जब मिले नाहीं।
परस्त्री हू गमन करे, दाम चौर लाए थे॥
चोरी हू करे हैं आप, जब जूआमें हार होय।
एते व्यसन सात एक जूआमें समाए हैं॥

इस प्रकार उन परोपकारी मुनिवर्यने बोध देकर उस राजाके दुराचरण दूर किये और प्रजाको सुखीकी।

तात्पर्य—कि इस प्रकार एक जूआसे सातों व्यसनोंकी प्राप्ति होती है।

अब एक२ व्यसनकी अलग२ व्याख्या करता हूं सुझ प्राणी ध्यान पूर्वक पढ़ें।

पहिला व्यसन जूआका खेलना।

इस व्यसनको सेवन करनेसे द्रव्य हीन होकर महान दुख उठाना पड़ता है।

देखिये "जूआ" (Gambling) से पांडव लोग अपनी रानी द्रौपदीको हार गए, इतनाही नहीं बल्कि नाना प्रकारके नुकसान होते हैं कहा है–

द्यूतेनार्थयशः कुलक्रमकला सौन्दर्यतेजःसुहृत् ।
साधूपासनधर्मचिन्तनगुणा नश्यंतिसाधोरपि ॥
यद्वत्पांडुसुतेषुतच्च्युतसुधिष्वादित्यभावार्जिते ।
विश्वेकिंमतसास्फुटंघटपटस्तंभादिवालक्ष्यते॥१॥

अर्थ–सज्जन पुरुष भी अगर द्यूत (जूआ) के व्यसनको सेवन करने लगजावें तो उनके धन, यश, कुलमर्यादा, चतुराई, सुन्दरता, तेज, प्रेम, मुनिवरोंकी सेवा, धर्मके विचारादि नष्ट हो जाते हैं जैसे कि सुबुद्धिसे च्युत हुए पांडु पुत्रोंकी इस द्यूतसे दुर्दशा हुई सत्य है संसारके अन्दर सूर्यके मौजूद होनेपर भी जब अन्धकार प्राप्त होता है तब घटपट स्तम्भ वगैरह अदृश्य हो जाते हैं।

और भी कहा है—

मायां करोति विकरोति सदैव सत्यं ।
क्रोधं ददाति विदधाति बहूननर्थाम् ॥
चौर्ये मतिं हितनुते तनुते च दोषान्।
द्यूतेरतो भवतिचेन्मनुजःपृथिव्याम् ॥१॥

अर्थ—यदि प्राणी पृथ्वीमें जूआ खेलने लगजाय तो इतने दोष उत्पन्न होजाते हैं, माया करता है, सत्यका विकार कर देता है, क्रोधको धारण करता है, चौरीकी मति करता है, आदि बहुतसे अनर्थोंको सेवन करता हुआ दोष विस्तीर्ण करता है।

जूआवालोंका कभी विश्वास नहीं किया जाता, और यावत् प्राणी विश्वास न हो कोई कामकी साफल्यता नहीं कर सकता।

इस व्यसनसे अहोरात्र आर्त्तरौद्र ध्यान (जो तिर्यंच और नरक गतीके दाता हैं) में वर्तता है न तो वह "धर्म-कार्य" (Religious Work कर सकता है न शुद्ध व्यवहार केवल लोभही लोभमें समय व्यतीत होताहै, लोभ एक ऐसी बुरी चीज है कि प्राणीकी अक्ल (Sence) भ्रष्ट कर देता है, लोभी प्राणी स्थान २ पर दुःख उठाता है, देखिये एक धनाढ्य लोभी पुरुषकी बड़ी दुर्दशा हुई।

किसी ग्राममें एक धनाढ्य सेठ (Richman) रहता था एक वक्त वह व्यापारके वास्ते विदेशमें गया, ज्योंही वह समुद्रमें जहाजों द्वारा सफर (Travelling) कररहा था कि अचानक महा प्रचण्ड वायु (Stormynxnd)चलने लगी जिससे जहाजें पानीमें डूबने लगीं इस महा दुखदाई हालको देखकर उसने अपने इष्टदेवका स्मरण किया और प्रार्थनाकी कि हे नाथ यदि यह मेरी नावें न डूबें और मैं साऩन्द समुद्रपार होजाऊं तो एक नारियल (Cocoanut) आपके चरणोंमें अर्पण करूंगा देवकी कृपासे, वह कुशलता पूर्वक पार हो गया।

जब कि वह शहरके अन्दर पहुँचा, एक दुकानदारको यहां जाकर पूंछा कि भाई मुझको एक नारियलकी आवश्यकता है क्या किम्मत (Price) लोगे उसने कहा दो आने इसने कहा पौन दो आने इस प्रकार आठ दुकानोंपर फिरा ता हरएक एक २ पैसा कम बताते गए अर्थात् आठवीं दुकानपर पाव आना किम्मत बताया तब सेठ कहने लगे कि अर्ध पैसेमें दो तो लेलूं, दुकानदार समझा यह कोई महा लोभी है ऐसा जानकर कहा सेठजी आप पैसे क्यों खर्च करते हैं? यहांसे दो माइलपर एक नारियलका वृक्ष है वहांसे मुफ्त ले आइये, सुनतेही इन वचनोंके वह सेठ हर्षित होकर जहांपर नारियलका दरख्त था, गया, देखता क्या है कि वह दरख्त फलोंसे लदालूम है देखकर विचार करने लगा कि बहुतसे फल लेलूं लोभवश होकर एकदम दरख्त (Tree) पर चढ़ गया एक हाथसे साखा (Branch) पकड

रक्खी और एक हाथसे नारियल तोडने लगा जब एक हाथके बलसे नारियल न टूटने लगा तब विचार किया कि दूसरा हाथ भी मिला दूं और झटसे तोडकर पीछी साखाको पकड लूंगा, ज्योंहीं उसने दोनों हाथोंसे फलको खीचा, कि उस झटकेसे स्थान छूट गया और उस फलको लटका हुआ झोला खाता है, अब वह विचार करने लगा, कि हे प्रभो! यदि मैं पैसे देकर नारियलको ले लिया होता तो इतना कष्ट न उठाना पडता हे नाथ! अब मैं क्या करूं? सच है कहा भी है कि:—

दोहा।

मक्खी बैठी सहत पर, पंख लिये लिपटाय।
हाथ अरु सिर धुने, लालच बुरी बलाय॥ १॥

इतनेमें एक हाथीवाला आ निकला, देखकर सेठने कहा हे भाई! इधर आना जरा दीन दुखियाकी खबर लेना सुनतेहीं हाथीवाला वहां पहुँचा, उस लटके हुए सेठको देखकर भयभीत हो गया उसने पूछा, रे भाई, तू कौन है? क्या भूत है, पिशाच है, यक्ष है, राक्षस है, कौन हैं तब सेठने कहा भाई मैं इनमेसे कोई भी नही हूं मै तो

अमुक २ सेठ हूं इस२ प्रकार दुःखमें ग्रस्त हो रहा हूं यदि तू कृपा करके मुझे हाथी (Elephant) पर खड़ा होकर उतार ले तो मेरे पास जो दश हजार रूपये हैं उसमेंसे आधे यानी पांच हजार रुपये तुझे समर्पण करूंगा इस वातको सुनकर वह लोभी हाथीवाला बोला यदि सात हजार दे तो उतार लूं वरना नहीं, सेठने सोचा कि जान (Life) चली जायगी इससे तो रुपये देना बेहतर है कारण कि अक्षर जिन्दे रहेंगे तो बहुत सा द्रव्य उपार्जन करेंगे ऐसा विचारकर कहा अच्छा भाई तुम्हारे कथनानुसार रुपये देनेको मैं आमादा हूं इस प्रकार इकरार होनेपर वह हाथीको नारियलके दरख्तके नीचे ले गया अम्बाडी(Letter) पर खडा होकर उसको उतारनेको तत्पर हुआ मगर पैराको उठाकर लम्बे हाथ करनेपर भी कुछ ऊँचा रह गया इस वास्ते विचार किया कि थोडासा कूदकर शीघ्रही उतार लूं हाथीको विश्वासकर ज्योंही उसने कुदकी मारकर पैर पकडे कि हाथी चल पडा, अहा ! क्या कही एक की जगह दो लोभी लटके हुए झोले खा रहे है, इतनेमें एक घोडा वाला आया उसकी भी वही दशा हुई जो कि हाथीवाले की हुई अब तो तीनोंके तीनों लटक रहे हैं.

अब वह घोड़ावाला और हाथीवाला उस सेठसे प्रार्थना करते हैं कि हे भाई सेठ ? ऐसा मत करना कि तुम हाथ छोड दो वरना हम दोनों मर जायेंगे, इधर उनका कहना हुआ कि उधर उस सेठके शिरमें खुजली चली ज्यों ही उसने खुजली खुननेको एक हाथ उठाया कि दूसरा हाथ भी रपट गया रपटते ही वे तीनों एकपर एक गिरपड़े।

देखिये इस प्रकार लोभी पुरुषोकी बडीही दुर्दशा होती है और जूआ परिपूर्ण लोभसे भरी हुई है इस लिये जो आत्म हित वांछक इस व्यसनको बिलकुल परित्याग कर देना चाहिये.

आजकल नई २ प्रकारकी जूआ निकली है सट्टा (Speculation) भी जूआ ही है इसके वशीभूत होकर लाखो लक्षाधिपति कंगाल हो गये। इतना ही नहीं बलके कई लोगोने अपने आबरूके डरसे अपघात (Suicide) किया है।

धिक्कार पड़ो ऐसी जूआपर कि जिंससे मनुष्य नाना प्रकारके कष्ट उठाकर दुर्गतीका भागी बनता है।

मैं उम्मेद करता हूं कि मेरे प्रेमी पाठकगण इस व्यसनको तत्काल परित्यागकर देंगे। इति.

दूसरा व्यसन मांस भक्षण ।

इस व्यसनसे शारीरिक और आत्मिक दोनोंही हानि होती है ।

बड़े २ डाक्टर, वैद्य और हकीमोंने पदार्थ विज्ञान (Seience) से यह वात सावितकी है कि मांसका खाना सर्वथा हानिकारक है इससे नाना प्रकारकी व्याधियां (Deiseases) उत्पन्न होती हैं ।

विलायतके अन्दर एक "व्हिजीटेरियन सोसाइटी" खोली गई है जिसका खास यही उद्देश है कि मांसको भक्षण नही करते हुए वनस्पतियोंपर निर्वाह करना फल दायक है, मांस भक्षण करने वालोंका कथन है कि इससे शरीर पुष्ट होता है मगर जहांतक विचार किया जाता है विदित होता है कि अन्नादि पदार्थोंमें विशेष वल शक्ति है देखिये किसीने कहा है किः—

मांसा दश गुणं पिष्टं, पिष्टा दश गुणंपयः ॥
पय सोष्ट गुणं चान्न, मन्नादश गुणं घतं॥१॥

अर्थ—मांससे पिसानमें दशगुणा, पिसानसे दूधमें दश गुणा, दूधसे अन्नमे दशगुणा, अन्नसे घृतमें दशगुणा वल होता है ।

कितनेक जने इस बातको बयान करते हैं कि मांस खानेसे अक्ल तीव्र होती है मगर वास्तवमें उनका खयाल वंध्या पुत्रवत् है कारण कि यदि ऐसा हो तो कुत्ता (Dog) बिल्ली (Cat) सिंह (Lion) आदि क्यों कोर्टमें बैठकर इनसाफ (justice) नहीं देते तथा कई मांससे घृणा करने वाले (Vegisiterians) क्यों बड़े ओहदोंपर मुकर्रर होकर क्यों राज्य कार्य चलाते है ?

उन बिजिटेरियन आलिमोंने बडे २ ग्रन्थ रचकर निश्चय कर दिया है कि मांस खाना किसी मसरफका नहीं है (Good for nothing) देखिये "ब्रामले" फेनले डी मारग्रेट. हास्पीटलके सीनीअर डाक्टर मि० जोशिया ओल्ड फिल्ड डी. सी. एल, एस. ए. एम. आर. सी. एस. एल. आर सी. पि. लिखते हैं:—

"Flesh is unnatural food, and therefore tends to create functional disturbances. As it is taken in modern civilization it is affected with such terrible diseases (readily communicable to man) as Cancer, Consumption, Fever, intestinal, worm etc., to an enormous extent There is little need of wonder that flesh eating is one of the most serious causes

of the diseases that carry off ninty—nine out of every hundred people that are born "

Dr Josiah Old Field.
D. C. L. M A. M. R C. S
L. R. C. P.

भावार्थः—मास एक श्रृष्टिक्रम विरूद्ध खुराक है, वास्ते उससे शरीरके कितनेक भागोमें दर्द हो जाता है, हालके सुधरे हुए जमानेमें उसको खानेसे मनुष्यको नासूर, क्षय, ज्वर और आंतोके भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं इस श्रृष्टिमें पैदा हुये १०० मनुष्यों पीछे "मांसाहार" के जो बिमारियोंकी उत्पत्तिका एक गंभीर कारण है. से मृत्यु होती है यह बात निर्विवाद है।

उपरोक्त वचनोंसे मालूम होगया होगा कि मांसाहार श्रृष्टि क्रमके विरुद्ध है, इसी प्रकार हजारों मनुष्योंने अपने अभिप्राय प्रकट किये हैं किं मांसाहार केवल नुकसान कारक है।

मूर्ख लोग क्षण भरके सुखके लिये अपने शारीरिक नुकसानके साथ २ एक विचारे प्राणीके प्राण हरण कर लेता है। इतनाही नहीं बलके बहुतसे अनभिज्ञ लोग अपने जिह्वाकी लौलुप्यतासे देव और देवीका नाम लेकर विचारे

निरापराधी प्राणियोंका नाश करके नुकसान कारक मांसका अहार करते हैं.

इसके साथके साथ सरस्वतीके दुश्मन यह कहते हैं कि जिन जीवोंका हम वलीदान करते है वे मोक्ष जाते हैं तो हे वादी! यदि ऐसा ही हो तो क्यों नहीं इस क्रियासे अपने प्रिय कुटुम्बियोंको सद्गतीमें पहुंचा देते मगर पहुंचावे कहांसे वह तो केवल लौलुप्यता है सवव मांसाहार करना सर्वथा नुकसान कारक है।

कई लोग मांस भक्षणसे तन्दुरुस्ती होना वताते हैं मगर उसके लिये नीचे लिखे डाक्टरके मनसे ज्यादे पुरावेकी जरूरत नहीं होगी—

"I have been a vegetarian for about 13 years, and during that time have found that my faculties were better than before, and my health has been excellent I have found no disadvantage, but every advantage in being a vegetarian.

Scientists are coming to the conclusion that there are in meat certain things which are absolutely poisonous × + × +

The distinguising charecter of vegetarians is their power of enduruance. × × × I do not think that you would have any better example of the error people have made in thinking that meat and beer make good fighting men, than in the present war which Japan is carrying on.

Dr. G. F. Rogers M D.

Meeting at cambridge.

May 12th. 1905

भावार्थ—करीवन १२ वर्ष से मैं फल आहारी हुआ हूं और तवसे मेरी बुद्धि प्रथमसे ज्यादे तेज हुई है और मेरी तन्दुरुस्ती बहुत ही अच्छी है फलाहारी होनेसे मुझे नुकसानके वजाय सर्व प्रकारके फायदे ही हुए हैं वैद्य शास्त्री लोग दिन वदिन इस नतीजे पर आते जाते हैं के मांसमें है जरूर एक प्रकारका ज़हर है,

फलाहारीमें सहन शीलता स्वाभाविक तोरपर होती है।
यह लोगोंकी भूल भरी हुई मान्यता है कि मांसाहार तथा मदिरा मनुष्यको उम्दा लडैया वनाते हैं और उसके दाखलेके लिये वर्तमानमें चलती हुई जापान की लडाईसे ज्यादे न होगा डाक्टर जी. एम राजर्स एम. डी. इस प्रकार अनेकानेक दाखले मौजूद हैं मगर ग्रन्थ वढ जानेके भयसे सर्वको यहां उद्धृत नहीं कर सकता।

इंगलैण्डके व्हिजिटेरियन लोग जो सरगरमीसे कोशिश कर रहे हैं वह स्तुतिपात्र है इस विषयमें एक साहब ते, कहते हैं किः—

I sincerely hope that before the close of the (ninteenth) century, not only will slaughter houses be abolished, but that the use of animal flesh as food will be absolutely abondoned

Sir Banjamin W Richardson M D. F R. C S from an address before the Congress on Public Health

मैं अन्तःकरण पूर्वक आशा रखता हूं कि १९ वी सदी पूर्ण होनेके पहिले ही कसाई खाने वन्ध हो जावेंगे इतनाही नहीं परन्तु जानवरका मांस जो खुराककी तौरपर काममें आता है वह भी विलकुल छोड दिया जावेगा।

सर वेंजामिन डबल्यु रिचर्डसन एम. डी. एफ. आर. सी. एस. (के सामान्य तन्दुरुस्ति भाषण मेंसे) इन महानुभाव अंग्रेजको मैं वारम्वार धन्यवाद देता हूं और अन्तःकरण पूर्वक चाहता हू कि उनकी यह इच्छा परिपूर्ण हो।

इसके अतिरिक्त आत्मिक.यह नुकसान है कि मांस खानेवाला निर्दय हुआ करता है,जहांतक प्राणीके घटमें करुणा नहीं होती

सुकृत नही कर सकता और अकृत्योंमें हमेशा अशुभ कर्मका बन्धन होता है जिससे आत्मा भारी होकर महान कष्ट उठाती है इस लिये—

भो देवानुप्रिय ! जो अपना हित चाहते हो तो मांस भक्षण सर्वथा परित्याग करना चाहिये, जिससे इस लोक और परलोक दोनोंमें सुखी होजाओ।

तीसरा व्यसन मदिरा पान।

इस व्यसनसे प्राणी अपने द्रव्य और बुद्धिको नष्ट कर देता है तथा कुटुम्ब परिवार राज-दरवारादिमें बड़ी दुर्दशा कराता है स्थान २ पर हँसीके पात्र होता है देखिये कहा भी है—

दोहा।

नशा न नरको चाहिये, द्रव्य बुद्धि हर लेन।
नीच नशाके कारणे, सब जग ताली देत॥ १॥

नशेके अन्दर बेभानता होजाती है जिससे द्रव्यका नष्टपना होकर कंगाली दशामें प्राप्त होजाता है, कुटुम्बका पोषण करना कठिन होजाता है, तथा ज्ञान नष्ट होनेसे अज्ञान दशामें वर्त्तता हुआ नाना प्रकारके अकृत्य करके दुर्गतिका भागी होता है।

मद्यके अन्दर मोहित हुए प्राणीको कृत्याकृत्य कुछ नहीं सूझता है, किसी कविने कहा है—

मद्यंमोहयतिमनोमोहितचित्तस्तुविस्मरतिधर्मम् ।
विस्मृतधर्मोजवो हिंसामविशङ्कमाचरति ॥ १ ॥

अर्थः—मद्य मनको मोहित (विचार रहित उन्मत्त) करता है और उन्मत्त पुरुष धर्मको भूल जाता है,धम रहित निर्भय स्वच्छन्द होकर हिंसादिका आचरण करने लग जाता है इसलिये मद्यको सर्वथा तजना चाहिये।

और भी कहा है—

चित्तभ्रान्तिर्जायते मद्यपानात् ।
भ्रान्ते चित्ते पापचर्या भ्युपैति ॥
पापं कृत्व दुर्गति यान्ति मूढा ।
स्तस्मान् मद्यं बुद्धिमद्भिर्न न पेयम् ॥१॥

अर्थ—मदिरा पीनेसे चित्त भ्रान्त होजाता है, भ्रान्त चित्तसे पापका आचरण प्राप्त होता है; इस लिये मदिरा कदापि पान न करना।

उपरोक्त श्लोकोंसे आपको विदित होगया होगा कि मदिरापान करना कितना बुरा है।

थोड़ेही समय पहिले बड़े २ राजामहाराजा और बादशाह इस व्यसनमें ग्रस्थ होकर नष्ट होगये.

बहुत दूर न जाइये मुसलमीन बादशाहोंकी वख्तमें महाप्रतापी पृथ्वीराज चौहान होगया है. वह शराबका बड़ा भारी शोकीन था इसीसे वह एक स्त्रीके फंदमें पड़कर पायमाल होगया.

मुसलमान बादशाहोंमें भी कई शाह इस व्यसनके वशसे राज्यखो बैठे.

वर्तमान समयके कई नाम धारी क्षत्री तथा अन्य अधम लोग इस व्यसनमें इतने तल्लीन रहते हैं कि उन्हें उस वख्त मानो स्वर्ग सासुख अनुभव होता है. मगर वे यदि दीर्घ दृष्टि देकर विचारेंगे तो मालुम हो" के वे फायदेके बजाय सेंकड़ों नुकसान उठाते हैं.

हमने अपनी चक्षुओंसे देखे हैं कि कई शराबीलोग नशाकरके निरर्थक प्रलाप किया करते है. इतनाही नही बलके कई वख्त शस्त्रादिसे अपने अवयवोंपर घात करते है तथा कई अन्य पुरुषोंको मार बैठते हैं जिससे कि उन्हें सजादि भोगने पड़ते हैं.

इस व्यसनाधीन प्राणीका वीर्य पराक्रमादि नष्ट होजाते हैं. जबतक उसके बकवादसे आदमी डरता रहता है तब तक तो वह भयंकर मालुम होता है मगर यदि उस आदमीका सामना किया जावे तो वह जल्दी पराभवको प्राप्त होजाता है.

जबकि प्राणी नशेमें लीन होजाता है वह अपनी माता, स्त्री, भगिन्यादिको प्रथकर करनेमें असमर्थ हो जाता है.

इस व्यसनवाले प्राणीके चेहरेका नूर उतरता जाता है और बिलकुल पागल सा नजर आता है.

इस वख्त कई एक राजामहाराजाओंने इस व्यसनको देश वटा दे दिया है क्षत्री वेही हैं जो व्यसन रहित पराक्रमी हो.

देखो आज वह जमाना आगया है कि ओसवाल (अस्पक्त) जो असल क्षत्रिय हैं वैश्य (वनियों) की गिनतीमें आने लगगये मगर असलमें देखा जावे तो वे शुद्ध क्षत्री हैं.

इस वख्त जैन क्षत्रियोंमेभी भंग माजु मगुल फंदादिका चढ़ा अभिष्ट कृत्य प्रचालित होगया है. इसीसे इनकी संतान करीब २ निर्बल होती है.

इसलिये भो भव्य प्राणियों बुद्धि और द्रव्यको नष्ट करनेवाले इस नशेसे हमेशा बचे रहना चाहिये.

इस व्यसनाधी लोग दुष्ट प्रयोक करके नये २ अशुभ कर्मोंको उपार्जन करते हैं-बेभान होकर गधेकी तरफ इधर उधर बाणलेके माफिक घूमते रहते हैं. दलिद्री व आलसी की तरह कई वख्त पड़ेही रहते हैं. इसका विवरण कहां-

तक लिखूं यह व्यसन बहुतही बुरा तथा अचिरात् त्याग देने योग्य है.

इस व्यसन वाला प्राणी अलमस्त हो ईधर उधर फिरता रहता है मगर सचमें देखा जावे तो वह मनुष्योंकी गिनतीमें नहीं, देखो ठीक कहा है:—

दोहा।

अज्ञानी मदमस्त हो, फिरे डोलते छेल।
सींग पूंछ ते रहितसो, निश्चय जानो बेल ॥ १ ॥

जब आदमीका नशा उतर जाता है तो वह बहुतही लज्जाको प्राप्त होता है मगर दुराचारी थोडी देरमें उस लज्जाको त्यागकर पुनः नशेमें मग्न होजाता है सच है वे शरमको शरम काहेकी इस पर एक कवीने ठीक कहा है:—

शरमकोभि यहांपर, शरम आय है।
जो बेशरमहों, वे न शरमाय है ॥

बस तो निश्चय हुवा कि शराबका पीना बहुतही अनिष्ट है, सबब भोः भव्य प्राणीयों, यदि अपना हित चाहते हो तो इस दुष्ट व्यसनको देश वटादे दो. इति।

चतुर्थ व्यसन वेश्या गमन।

इस व्यसनसे इतना अनर्थ होता है कि जिसकी हद नहीं क्या माता, क्या बहिन, क्या पुत्री, आदि सर्वही स्त्रीवत्

होते हैं, वडे २ राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार जो कि भरपूर इज्जत (Honour) से भरे हुए हैं अपनी कुलमर्यादानुसार हरएक सम्बान्धियोंसे शुद्ध परिचय रखते हैं ।

अगर इन इज्जतदार लोगोंको इतना भी कह देवें कि तेरी माता के दो पति हैं ।(Husbanbs) तेरे तीन बहनोई (Sisterinlaws) तेरे चार जंवाइ (Son inlaws)हैं तो उसपर कुपित होकर वडा दंगा मचाते हैं मगर वेश्या गमनमें वह शुद्ध परिचय इस प्रकार नष्ट होता है कि अल्पज्ञ लोगोंको भान तक नहीं पडता, यह भली प्रकार विदित है कि वेश्या के यहां जानेको किसीको भी मुमानियत नहीं है जो दाम(Nax) दे वही जा सकता है तो सोचिये कि जैसे एक पुरुष वेश्या (Prostitute)गमन करने को गया,इसके गमनसे गर्भ (Pragrancy)रह गया नव मास व्यतीत होनेपर एक पुत्री प्राप्त हुई, क्यों साहिव ? वह लड़की क्या शीलव्रतको अंगीकार करेगी ? तथा एक पतिसे दूसरा पति नहीं करेगी । नहीं २ कदापि नहीं वह तो सोलह शृंगार धारण करके उम्मदा सजे हुए कमरेके झरोके (खिडकी) में बैठकर चलते पुरुषोंको नाना प्रकारके हाव भाव दिखावेगी तथा पुरुषों को इशारे वाजीसे बुलावेगी और मौजूदा पुरुषके ऊपर ऐसे कटाक्ष नेत्र डालेगी कि जिससे वह हलाहल कामातुर

होजाय और कई एककी यहांतक दुर्दशा विगडती है कि जब वो उन कटाक्ष नेत्रोंसे वेभान होजाता तब वह दुष्टणी उस बेवकूफ (Mad) का पासका सर्व द्रव्य लेकर निकाल देती है, तात्पर्य कि वह पुत्री वेश्याहीके सर्व कर्तव्योंको करेगी, अब उसही पुत्रीके साथ चाहे पिता चाहे भाई चाहे पुत्रादि कोई भी संभोग कर आवे कोई रोक टोक नहीं, हाय! हाय !! धिक्कार है !!! उन पुरुषोंको जोकि ऐसे अनर्थ करते हैं।

यदि कदाचित् वो पिता-(जिसे कि वह वेश्याकी पुत्री पैदा हुई है) न भी गमन करे तो कागज कलम लेकर जरा द्वारपर बैठकर गिनती तो करे कि एक पुत्री और कितने जँवाई वाह ! वाह ! पुरुषार्थको धारण करनेवाले हातो ऐसेही हों । औरभी देखिये इससे शारीरिक, व्यवहारिक और धार्मिक कितने नुकशान होते हैं ।

कवित्त.

कायाहूसे कान जात, गाठहूसे दाम जात। नारीहूसे नेह जात, रूपजात रगसे। उत्तम सब कर्म जात, कुलके सब धर्म जात, गुरुजनकी शर्म जात, कामके उमंगसे ॥ गुण रंग इतिजात, धर्महूंसे प्रीति जात, राजासे प्रतीतजात, अपना

मतभंगसे । जप जात, तप जात, संतानहूको आश जात, शिव-पुरका वासजात, वेश्या प्रसंगसे॥

इस कवित्तसे मालुम हुआ होगा कि कैसे २ नुकशान, होते है.

वैश्या प्रसंग करनवाले मनुष्योंकी बुद्धि बिलकुल भ्रष्ट होजाती है, वह कुत्ते और कौवोंके भाफिक घर २ का उच्छिष्ट खाता फिरता है,सूवरके माफिक विष्टा खाता फिरता है.

वे मूर्खलोग अपनी प्यारी कुलीन गृहिणीसे बिलकुल नाराज रहते हैं यदि वह कर जोड़कर भी किसी बातकी विनंती करे तो चेंटकर सामने आते हैं और उस दुष्टाकी गालियें तक सुन २ कर हँसते हैं. शरम ! शरम !! शरम !!!

इस वैश्यामें एक महत् गुण और भी है के जिसपर यह प्रसन्न हे जाती है उस्का धनवीर्य हरण करके नपुंसक बना देती है अथवा उपदश (गर्मी)की बीमारीसे विभूपित कर देती है.

इसने कितनोंहीका धन हरण किया कितनोंहीको वैद्य और डाक्टरोंके सिपुर्द किये. किसको दारू पिलाया, किसको मांस खिलाया और किसीको चौरी करवाकर राज्यदण्ड दिलवाया इत्यादि बहुतसे कुकृत्य कराती है.

अरे, यह वेश्या साक्षात् राक्षसणी है कहा है:--

दर्शनात् हरते चित्तं । स्पर्शनात् हरते बलम् ।
भोगनात् हरते वीर्यं । वैश्या साक्षात् राक्षसी ॥

अर्थः—देखतेही चित्तको हरती है। स्पर्श करनेसे बल हरती है और भोगनेसे वीर्य हरण करती है, सचव वेश्या साक्षात् राक्षसी है.

इस व्यसनवाले प्राणीको कुछभी भय नहीं रहता यथा "कामातुराणां न भयं न लज्जा"

ये मूर्ख यह नहीं समझतेकी वह रंडा तो ऐसी है:—

दोहा।

करम फूटी जोगणी। तीन लोकको खाय।
जीवित खावे कालजा। मरे नरकले जाय॥

फिर भी उस कामातुर मूर्खको क्या होता है सो सुनोः—

छन्द।

सम्पति धीरज धर्मनसे कुल कानकी बान सबे तजडारी।
ज्ञाननसे अरु माननसे खल सोवत मांहि निशा अधयारी॥
व्यर्थ समय अनमोलनसे बल तेजकि हानि सबे करडारी।
शील सो उत्तम रत्न नशेपर तांहुन चेतन है व्यभिचारी॥

इस प्रकार वह कामातुर अनर्थ करते हुवे कुछ भी नहीं डरता; यदि ठीक सोचा जावे तो सर्व दुष्ट रिवाजोंसे प्रथम इसको इस दुनियासे निकाल देनेका प्रयत्न करना चाहिये. कई एक उपदेशक गला फाड़ २ कर प्लेट फॉर्म पर कूदते २ टेबिलपर हाथ पटकते और सिर पटका २ कर स्पीचें देते

है मगर हकीगतमें देखा जावे तो अन्यविषयोंकी ज्यादे पुष्टि करते हैं और इस्का कई वख्त जिक्र तक नहीं लाते. अफसोस, मेरे सुज्ञ मुनिवरों तथा उपदेशकोंसे प्रार्थना व समझूत है के वे सर्वसे पहिले इस दुष्ट व्यसनको बंध करवावें.

अहा वैश्याके विषयमें किसी कवीने ठीक कहा है.—

मत करो प्रीति वेश्या विष बुझी कटारी,
है यही सकल रोगनकी खानि हत्यारी ॥ टेक.
औषधि अनेक है सर्प डसेकी भाई,
पर इसके काटेकी नहीं कोई दवाई ॥
गर लगे बान तो जीवित हो बच जाई,
पर इसके नैनके बानसे होय सफाई,
है रोम रोम विष भरी करो ना भारी ॥ है यही—१
यह तन मन धन हर लेय मधुर बोलीमें,
बहुतोंका करे शिकार उमर भोलीमें ।
कर दिये हजारों लोट पोट होलीमें,
लाखोंका मन कर लिया कैद चोलीमें ।
गई इसी कर्ममें लाखोंकी जमीदारी ॥ है यही--२
हो गये हजारों के बल वीरज छारा,
लाखोका इसने वंश नाश कर डारा ।

गठिया प्रमेह आदिकने देश बिगारा,
भारत गारत होगया इसीका मारा।
कर दिये हजारों इसने चोर अरु ज्वांरी-है यही-३

इसही ठगनीने मद्य मांस सिखलाया,
सब धर्म कर्मको इसने धूर मिलाया।
अरु दया क्षमा लज्जाको मार भगाया,
ईश्वरकी भक्तिका मूल नाश करवाया॥
है इसके उपासक रौरव (नर्क) के अधिकारी-है यही-४

वह नव युवकों को नैन सैनसे खावे,
अरु धनवानों को चद्दर गद्दर कर जावे।
धन हरण करे अरु पीछे राह बतावे,
करे तीन पांच तो जूते भी लगवावे॥
पिटवाकर पीछे लावे पोलिस पोकारी-है यही-५

फिर किया पुलिसने खूब अतिथि सत्कारा,
हो गई रुजा मिला मज़ा इश्क़का सारा।
जो झूठ होय तो सज्जन करो विचारा,
दो त्याग झूठ करो सत्य वचन स्वीकारा॥
अब तजो कायः प्यारे निंदा दुखकारी, है कही-६

जरा औरभी सुनिये यह वैश्या किसीकी नहीं होती क्योंके उसके सैकडों पती होते हैं इसपर मुझे एक दृष्टान्त याद आया है वह यह है:—

एक ग्राममे एक धानिक रहता था उसकी स्त्री वड़ी पतिव्रता साक्षात् लक्ष्मी तुल्य थी वह धानिक दुर्भाग्यवश एक वैश्याके मुहब्बत में फस गया यहा तक कि दिन रात उसे उसके वगैर चैन न पडती थी क्रम से उसके पासका सर्व द्रव्य वैश्याने अपने कब्जे कर लिया इतनेसे भी जब न रहा गया तो उसकी स्त्रीके कई एक झेवर वेच दिये.

इस प्रकार कितनेक दिन वीत गये तब वैश्या कपट रचनाकर मधुर स्वरमें वोली, हे स्वामीनाथ, अब द्रव्यके वगैर काम नहीं चलता. कुछ उधम कीजाजिये. इतनी वात उस वैश्याकी सुनकर वह मोहान्ध धनक वहांसे रवाना होकर एक नगरमें पहुंचा और किसी अदालतमें ४० रुपये महावारपर नौकर हुवा.

कितनेक दिनोके वाद जव उसके पास कुछ द्रव्य हुवा तो विचार किया कि अव उस वैश्याकी भी खवर लेना चाहिये. ऐसा विचार कर कितनेक रुपे एक अपने विश्वास पात्र

आदमीको देकर कहाकी इन रुपयोंकी ३ पांती करना उनमेंसे २ पांती तो अमुक वेश्याको देना. और एक पाती हमारी स्त्रीको देना. ऐसा कहकर नौकरको बिदा किया.

वह नौकर बड़ा विचक्षण था, समझगया कि कारकून साहब व्यर्थ धन खोते है अस्तु, मेरी जानमें तो जहांतक होगा सर्व रुप्या इस्की और तहीको दूंगा.

ऐसा विचार करता हुवा उस वेश्याके यहां पहुंचा और जाकर कहा की तुमारे प्राणवल्लभने यह द्रव्य भेजा है. उसने उत्तर दिया की किस प्राण वल्लभने भेजा है. नौकर बोला कि तुम जब तुमारे प्राणनाथकोभी नहीं पहिचानते तो रुपये देनेसे क्या मतलब है. अगर तुम नाम बता सके हो तो मैं रुपये दूं.

इतैना सुनकर उस वेश्याने तीन फोटो लाकर बताये मगर उनमें उसके मालिकका फोटो नहीं था. फिरभी वेश्याने १३ जनोंके फोटो बताये. जब नौकरने इनकार किया तो ५६ के फोटो बताये मगर उनमेंभी उस्के मालिकका चेहरा नहीं नजर आया. तब नौकरने पूछा औरभी कोई बाकी है वेश्या बोली,—यों तो सेकड़ों भडवे मेरी पेढ़ीपर रोते

फिरते हैं. इतना सुनकर वह नौकर वहांसे उस धनिककी स्त्रीके पास गया और जाकर जोहीं उस्को उस्के प्राणधारके हाल सुनाये वह गद्गद कंठ होगई और सानंद रुपया स्वीकारकर रसीद लिखदी.

वह नौकर रसीद लेकर अपने मालिकके पास पहुंचा रसीद देखतेही मालिक नाराज हुआ और बोला " वैश्याको क्यों नहीं दिया " नौकर बोला "हुजूर आप "तीन मेन तेरे मेन छप्पनके मेरेमें " कहिये आप कौन पेढ़ीके भड़वे हैं. यह सुनकर पुरुष बहुत लज्जित हुवा और फिर कभी वैश्या गमन नही किया.

इस प्रकार जिस्को अपने कुलमें कलंक लगाना हो वह वैश्या संग करे.

कई मनुष्य यहांपर प्रश्न करते हैं कि वेश्यागमन निषेध किया मगर वेश्याको नचानेमें तो कोई हर्ज नहीं ?

उत्तरमें विदित हो कि यह तो उस वाली बात हुई कि " चोरी करना बुरा है मगर डाका डालना तो बुरा नहीं " अरे भाई ! यह तो उसका भी गुरू धंटाल है वेश्यागमनके व्यशनको पैदा करनेका एक मुख्य कारण (Priucipa Reason) है

जिस वक्त वह उमदा पोषाक (Fashionable Dress) पहिनकर नृत्य करने लगती है उस वक्त हाथ, पैर आंख मुख आदि सर्व शरीर द्वारा ऐसे विकारतासे लटके करेगी कि शीघ्रही कामदेव जागृत होजावे. यहांतक कि वाज वक्त किसी भी प्रयत्नसे उसे व्यभिचार करनाही पडे, इसलिये नृत्य कराना वहुत बुरा है वेश्यागमनसे भी इसे रोकनेको पहिले प्रयत्न करना चाहिये.

नृत्य करनेवालेको सुज्ञ पुरुष तो तिरस्कार करतेही हैं, मगर खास वह नृत्य करनेवाली वेश्याही और तबले सारंगी भी नालत (धिक्कार) देते हैं कहा गया है—

कवित्त.

सुकाजको छोड़ कुकाज करें, धन जात है व्यर्थ सदा तिनको । यक रांड़ बुलाय नचावत है, नही आवत लाज जरा तिनको ॥ मृदंग कहे धिक् है धिक् है, सुरताल पुछे किनको किनको । तब उत्तर रांड वतावति है धिक् है इनको इनको इनको ॥ १ ॥

देखिये जीवा जीव दोनोंही धिक्कार दे रहे हैं मगर अज्ञानी लोग कर्मके मर्मको बिलकुल नहीं समझते और अनर्थ कर-

नेको तत्पर होजाते हैं इसलिये—

भो सुखाभिलाषी ! वेश्या गमन और वेश्या नृत्य दोनोंही परित्याग करना चाहिये जिससे सुकृत्य करके सद-गतिको प्राप्त हो.

पांचवां व्यसन शिकार खेलना ।

इस व्यसनको सेवन करनेवाला प्राणी दुष्टताको धारण करके बिचारे निरापराधि जीवोंको मारकर अपनेको धन्य समझते है, क्या ऐसी हालतमें वे अपना भलाकर सक्ते है ? नहीं २ तावक्तेकी अपनी आत्मा सदृश परात्माको न मानी और समभाव ग्रहण न किया सद्गति मिलना दुष्वार है, तीर्थंकर, गणधर और महानाचार्य यहांतक फर-माते है कि हमेशा चोरासी लक्ष योनीसे क्षमा मांगना चाहिये तो उन्हें प्राण मुक्त करना अथवा उनकी जानको तकलीफ पहुंचानेका तो कहनाही क्या ? देखिये कहा है:—

॥ गाथा ॥

खामेमि सव्वेजिवा । सव्वे जीवा खमंतुमे
मित्तिमे सव्वभूएसु । वेरं मझंन केणई ॥ १ ॥

अर्थ—वैर भावको दूर करके, सर्व जीवोंसे मित्र भाव रखता हुआ, सर्व जीवोंको क्षमाता हूं, सर्व जीव मुझे क्षमा करें।

"अहिंसा परमो धर्मः" के आचरण करनेवाले प्राणी इस भव और परभव और भवोभवमें सुखी होते हैं.

जिसने हिंसा करना परित्याग किया है उसमें कोमलता आकर निवास कर देती है, और जहाँ कोमलता है वह सद् मार्गका आचरण मौजूद है और जहां सद् आचरण हैं वहां सद् गतिकी प्राप्ति है, कहा है—

सर्व हिंसानिवृत्ताये । येच सर्व सहानराः ॥
सर्वस्याश्रयभूताश्च । ते नराःस्वर्ग गामिनः ॥ १ ॥

अर्थः—जो मनुष्य सर्व हिंसा करके रहित, सर्व सहन करनेवाले व सकलके आश्रयभूत होते हैं, वे देवलोकमें प्राप्त होते हैं।

क्या जैन, क्या वैष्णव, क्या मुसलमीन, क्या क्रिश्चनादि सबही मजहबोंके अन्दर हिंसा करना बुरा माना है. देखिये एक अंग्रेजी कविने कहा है.—

(LONG FELLOW)

Turn turn thy hasty foot aside.
Nor crusk that helpless worm.
The frame thy scornful thoughts deride.
From God reecived its from (1)
The commonlord of all that move.
From whom thy being flowed
A portion of his boundless love
On that poor worm bestowed. (2)
The sun the moon the star he made.
To all his creartures free.
And spread ovor earth the grossy blade.
For worms as well as thee (3)
Let them enjoy their litle day.
Their humble bliss receive.
Oh donot. lightly take away.
The life thou canst not give (4)

अर्थ—ए उतावलसे चलनेवाले तेरा फुरतीला पांव अलग हटा, उस विचारे विना शाहय कीड़ेको न कुचल, जिस शकलपर की तेरे घृणीत खयाल पैदा होते हैं, वह ईश्वरकी बनाई हुई है. तमाम त्रस प्राणियोंका स्वामिन् .जिससे कि तेरी आत्मा भी हुई है, अपने अपार प्यारका थोड़ा हिस्सा इस विचारे कीड़ेको भी दिया है. उसने सूर्य, चंद्र,

तारे बनाये हैं, और उसके तमाम प्राणियोंको आजाद किये हैं और पृथ्वीपर हरी २ सवज़ी फैलाई, सबब उसके लिये तू और कीडा बराबर है. उन विचारोंको उनके थोड़ेसे दिन सानंद बसर करने दे और जिस जानको तू नहीं दे सक्ता उसे जान बूझ कर न ले।

उपरोक्त कविता (peom) से आपको विदित हो गया होगा कि अंग्रेज लोगोंमें भी कितनेही दयालु लोग अपने सद्मार्गके रास्तेको पकड़े हुए हैं।

हिंसा करनेवाले प्राणी यदि बहादुरीको अख्तियार किये हुए हैं तो क्योंकर अपने शत्रु कर्मोंको नष्टकर न दिखाते हैं. केवल अडम्बरके डोलमे घूमते हुए अकृत्य करके दुर्गतिके भागी होते हैं।

वीर पुत्रो ! आगेके बहादुर क्षत्रियोंने अष्ट कर्मको नष्टकर शिवपुरमें निवास किया है आजकलके कायर क्षत्री लोग बिचारे निरपराधी जानवरोंको मारकर बहादुर होनेका हौसिला रखते हैं और आप सदृश कोई बड़ा (महत्) नहीं ऐसा मानते हैं।

आप जानते हैं कि बड़ा वही हो सक्ता है जो अपनेसे [illegible] आप लघुता धारण करता है। देखिये

दोहा ।

लघुतासे प्रभुता मिले, प्रभुतासे प्रभु दूर ॥
जो लघुता धारण करे, प्रभुता नहीं है दूर ॥ १ ॥

जहांतक पाणी समभावना न रक्खे पूर्णता सहन शीलता न रक्खे वड़ा नहीं कहला सक्ता, देखिये बाजारमें जो बिकनेको बड़े आते हैं वो भी कितनी शीतलताको धारण करते हैं तब " बड़े " कहलाते हैं तथा—

कवित्त ।

पहिले थे हम मर्द, मर्दसे नार कहाये ।
कर गंगामें स्नान रोग सब दिये बहाये ।
फर शिल्लनसे युद्ध पीस चूरन करवाये ।
लगे मसाला पान मरे मंमतके मारे ॥
चडे कडायो धीर घाव तन बरछी खाये ।
चले हूं छूटक नाहि बिके तब बडे कहाये ॥ १ ॥

इसालिये भो दयालु प्रिय ! यदि बडे महत्पनको चाहते हो बहादुर कहलाते हो उच्च कुलका दावा रखते हो तो द्रव्य और भाव दोनों हिंसा परित्याग करना चाहिये जिससे शीघ्र ही सद्गती प्राप्त हो.

आपको भली प्रकारसे मालुम है कि आपने कोईभी आदमी यदि एक थप्पडकी मारदे अथवा किसी अवयवको हानी

पहुंचावे तो अपनेको कितनी तकलीफ होती है तो बस ठीक इसी तरहसे अन्य कोभी महान् तकलीफ पहुंचती है.

अक्लके दुश्मन लोग अपनी बहादुरी बतानेको विचारे निरपराधी जीवोंको वृथा मार बैठते हैं.

किसी २ वख्तमें वे (हिंसक) यह बयान करते हैं के जो जानवर मनुष्यको तकलीफ पहुंचाते हैं उन्हें नष्ट करनेमें क्या हर्ज है क्योंकि ये हिंसक जानवर जब नहीं होंगे तो मनुष्यको तकलीफ नहीं होगी और निर्भय हो जावेंगे।

उत्तर—भो देवानु प्रिय,उनकी यह तर्क वृथा है कारण कि प्रथम तो ये बात उन जानवरोंमें स्वाभाविक है कुछ जान बूझकर मनुष्यको नहीं मारते, जैसे मनुष्य स्वयं अन्नादिका भोक्ता है सो स्वाभाविक है मगर सिर्फ अन्तर इतना है कि मनुष्य समभावसे भोगता है और तिर्यंच क्रूर भावसे आदमजात (Mankind) को तकलीफ पहुंचाते हैं. अस्तु कुछ भी होवे प्राणी जान बूझकर अपना नुकसान नहीं करते. उन अज्ञानियोंके साथ यदि तुमभी ऐसे हो जावोगे तो तुममें और उनमें कुछ भी फर्क न होगा. वे निर्बुद्धि मन्त हो. देखो प्रत्यक्ष सांसारिक दाखला बताता हूं के. यदि कोई बालक बडे आदमीको गाली देने लग जाय और उस समय सायका साथ वह बडा आदमी भी गाली देनेलगजाय

तो कहिये सुज्ञ पुरुष मूर्ख किसे कहेंगे ? अवश्य उस बडे आदमीको बेवकूफ कहेंगे.

बस तो इसीप्रकार उन अनाभिज्ञ मूर्ख जानवरोंपर क्रूर दृष्टि रखनेवालेको समझना चाहिये.

प्रिय वीर पुत्रों, क्षत्रियोंका खास धर्म भयभीतकी रक्षा करनेका है तो क्यों तुम इस वख्त विपरीत प्रवृत्तिमें मग्न होकर इस लोक और परलोकमें दुःखके भागी बननेका प्रयत्न करते हो.

भो भव्य प्राणियों, नित्य प्रति करुणा भावमें तत्पर रहोगे ताकि तुमारा मनुष्य जन्म सफल हो.

बस तो निश्चय हुवा कि " आत्मावत् सर्व भूतेषु यः पश्यति स पश्यति " गरजकी जो अपनी आत्माके सदृश अन्यको देखता है वही देखता है अन्य सदृश है.

ऐसा समझकर सुज्ञ लोगोंको हिंसा करना बिलकुल त्याग देना चाहिये. इति.

छठा व्यस चौरी करना ।

इस व्यसनको सेवन करनेवाले प्राणीकी कैसी दुर्दशा होती है यह प्रत्यक्ष प्रमाणसे सिद्ध है.

चौरी करनेवाले महाशयको किसीको एक माह किसी छः माह किसीको एक वर्ष किसीको पांच वर्ष आदि नाना प्रकार की सजाएं (Punishment) मिलती हैं।

चोर लोग यही विचार करते हैं कि मुफ्तका माल लेकर खूब मौज उडावें मगर आप जानते हैं कि अन्यायका पैसा कहांतक काम दे सक्ता है, पापका घडा अखीरको फूटताही है, चाहे कितनी भी होशियारी क्यों न कीजाय, देखिये कहा गया है-

त्रिभिर्वर्षै स्त्रिभिर्मासै । स्त्रिभिः पक्षै स्त्रिभिर्दिनैः ।
अत्युग्र पुण्य पापाना । मिहैव फलमश्नुते ॥ १ ॥

अर्थः-उग्र पाप पुण्यका फल तीन दिन या तीन पक्ष या तीन मास या तीन वर्षमें प्राप्त होता है।

चौर लोगोंको हमेशा धोका बना रहता है कि किसी न किसी दिन मेरी अवश्य दुर्दशा होगी और इसही चिन्तासे कोई कार्य निर्विघ्नतासे नहीं कर सक्ते।

चोर लोग कदाचित् यह विचार करें कि मैं चौरीके द्रव्यसे धर्मकृत्य करके मेरे बंधनको दूर कर दुंगा मगर यह कभी नहीं हो सक्ता कारणकी अन्यायका पैसा न्यायमें और न्यायका अन्यायमें फलदायक नहीं हो सक्ता।

इसपर मुझे एक दृष्टान्त स्मरण होता है, पाठकगण ध्यान पूर्वक पढे।

इसही जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रके अन्दर मगध देशमें अतीव मनोहर एक नगर था, इसमें बडे २ विशाल ध्वजा तोरणादिसे शुशोभित जिनेश्वरके मन्दिर थे तथा कई एक दृढ़धर्मी सम्यकृत्तवको धारण करनेवाले भव्यश्रावक वर्गनिवास करते थे।

यहांपर चन्द्रसेन नामका राजा अनेक राजाओंके गुणोंसे शोभायमान होता हुआ सुख पूर्वक राज्य करता था।

एक दिन राजाने विचार किया कि एक मजबूत शहर पना (Fortification) बनाना चाहिये जिससे प्रजाकी रक्षा हो और सर्व लोग सानन्द मेरे राज्यमें निवास करें।

ऐसा विचारकर ज्योतिषशास्त्रके अदर निपुण ज्योतिषी (Strologer) को बुलाया और अपनी मनोकामना सर्व कही।

ज्योतिषीने गवेषणा करके उत्तर दिया कि पृथ्वीनाथ! आगर रविवारको प्रथम प्रहरके बाद उत्तम मुहूर्त है. राजाने उनको बहुतसा पारितोषक (Roward) देकर विदा किया और कहा कि नियमित दिनपर सर्व सामग्री लेकर हाजिर हो जाना।

जबकि शनिश्चरवार आया उस दिन राजाने सर्व नौक-रोंको चतुरंगी सैना सज करनेका हुकुम बक्षा और गांवमें डूंडी फिरानेकी आज्ञा दी कि सर्व प्रजा प्रातःकालमें जलसेमें शरीक होवे अर्थात् उस स्थानपर (जहाँकी नींव डाली जावेगी) हाजिर रहैं।

बमुजिब आज्ञाके सर्व व्यवस्था करदी गई।

दूसरेही दिन सर्व प्रजा प्रातःकालमेंही नियमित स्थान पर पहुँची।

इधरसे सरकार अपनी चतुरंगी सैनाको लेकर रवाने हुए यह दृश्य एक अलौकिकही था। राजाके पहुँचतेही सर्व प्रजाने जयध्वनिकी, और यथोचित सेवाकी।

राजाने ज्योतीषको पूँछा कि सर्व वस्तु हाजिर है, उसने निवेदन किया कि हुजूर सिर्फ न्यायसे उपार्जन कीहुई सात मोहरोंकीही आवश्यकता है बाकी सर्व द्रव्य व मांगलिक की वस्तुआं हाजिर है।

राजाने अपने खजानची (Treasurer) को मोहरें लाने की आज्ञा दी इतनेमें ज्योतिषीने कहा हजूर आपके खजा-नेकी मोहरें काम नहीं आसक्ती कारण कि वहां न्याया-न्याय सर्व मिश्र है कृपाकर यहांपर एक निर्मल धर्मधारी न्यायशीलसागरचन्द्र नामक सेठ रहता है उसका पैसा न्यायोपार्जित है।

सुनतेही सरकारने सर्व समाचार कहकर नौकरोंको बग्गी लेकर भेजे।

नौकर लोगोंने सेठसे सर्व प्रार्थना की और कहा बग्गी हाजिर है विराजो

सेठने उत्तर दिया, भाई मैं चलनेको तैयार हूं मगर बग्गीमें मै नही वैठूगा, कारण कि मै न तो इन घोडोंको खानेको देता हूं न तुम्हें नौकरी (Pay) देता हूं।

ऐसा कहकर पैदलही दाडता हुआ राजाके पास पहुंचा।

राजाने सर्व हाल कहे और सात मुहरोंकी याचनाकी और कहाकि इसके एवजमें जितना द्रव्य तुम चाहो देनेको तयार हूं।

सेठने कहा हुजूर न्यायका पैसा अन्यायियोंके काम नहीं लग सक्ता ।

राजा क्रोधित हो धमकाने लगा और मोहरें जबरन लेनेकी चेष्टाकी कि इतनेमेंही ज्योतिषीने कहा हुजूर ऐसा करनेसे वह मोहरें भी अन्यायकी होजावेंगी।

राजा लाचार होकर कुछ भी व्यवस्था नहीं कर सका और नीवका मुहूर्त्त चूक गया।

राजाने सर्वके समक्ष कहा कि न्यायान्यायके पैसेकी अव-श्य परीक्षा करना चाहिये यदि सेठका पैसा न्यायका निक-लता तो ठीक वरना इसको सकुटुम्ब सूलीपर चढ़ा दूंगा मेरा बहुतही अपमान किया है ।

ऐसा कहकर सात मोहरें एक आदमीको देकर पूर्व दिशा (East) में रवाना किया और खानगीमें समझा दिया कि अच्छे धर्मात्मा पुरुषको दे । जिससे दुष्कृत्यमें न जाय ।

इसी प्रकार सात मोहरें सेठसे लेकर एक पुरुषको पश्चिम दिशामें (West)में भेजा और खानगीमें सावधान किया कि किसी दुष्टको देना जिससे दुष्ट कार्यमें लगे ।

ये दो मनुष्य दोनों दिशाओंमें गये अब क्या २ घटना हुई सो पृथक् २ लिख दिखाता हूं ।

पूर्व दिशावाला (जो कि राजाकी मोहरें लेकर गया था एक वियावान जंगलमें जा निकला देखता क्या है कि एक योगी अपने योगमुद्रामें तनमय है ।

उस पुरुषने विचारा कि इसहीको यह मोहरें अर्पण करदूं मगर इसके चाल चलन (Conduct) से तो वाकिफ होना चाहिये कि यह योगी है अथवा ढोंगी है ।

उसी वख्त निकटवर्ती झोपडीमें रहनेवाले गृहस्थसे पूछा कि इन योगीकी क्या हालत है।

उस गृहस्थने उत्तर दिया कि यह आज बारह वर्षोंसे योगसाधन करता है शीयलमें दृढ है आदि अनेक गुण सम्पन्न है।

उस पुरुषने वे सातों मोहरें उसके चरणोंमें रखदी और किसी एक वृक्षकी ओटमें छुपा हुआ योगीकी लीलाको देखनेकी गवेषणा कर रहा है।

ज्योंही योगीने मुद्राध्यानसे अपने पलक खोले कि मोहरें दृष्टिगोचर हुई, उसने विचारा कि मेरे योगपर कोई देव प्रसन्न हुआ है, मोहरोंको हस्तगत करतेही उसके प्रकृतिमें विकृति होगई और अब क्या विचार करता है कि—

मैंने इस संसारमें आकर मनुष्य जन्म वृथा गमा दिया खाना, पीना, ऐश आराम कुछ भी न किया खैर "भूले जबसे एक" ऐसा वह विचार एक शहरमें पहुंचा और एक वेश्याके यहां जाकर भोग विलास किया।

ये सर्व हाल उस पुरुषने भली प्रकार जान लिये।

अब इधरसे वह पश्चिम दिशावाला पुरुष (जोकि सेठकी मोहरें लेकर गया है) किसी एक शहरमें पहुंचा. हमेशा दुष्ट

पुरुषकी खोज करता है इस तरह एक सरोवरके पास जा निकला देखता क्या है कि एक धीवर मछलियें मार रहा है सैकड़ों मरी हुई मच्छियोंका ढेर लगा रहा है, उस पुरुषने विचार किया कि इसही महान हिंसकको यह सप्त मोहरें दो ताके अधिक हिंसा करे।

उस पुरुषने वे सातों मोहरें उस धीवरको दे दी और कहा "खाओ पीओ मौज उड़ाओ" (Eat drink and be merry)

ज्योंही उसने वे मोहरें हस्तगतकी कि शुभ विचार पैदा हुआ।

हे प्रभो ! मैंने मनुष्यभव वृथा गमा दिया सैकड़ों जीवोंका नित्य हिंसाकर दुर्गतिका प्रयत्न करता हूं।

हे नाथ ! इससे मुझे शीघ्रही मुक्तकर चरणका शरण दो आदि नाना प्रकारसे अपनी आत्माको धिक्कार देता हुआ अनित्य भावनाको भाने लगा, उसने विचारा "रोये राज कौन दे" खैर जो कुछ हुआ सो सही अब भी सावधान होजाना चाहिये किसी कविने ठीक कहा है।

दोहा।

बीती ताहि बिसारि दे, आगेकी सुधि लेय ॥
जोबनि आवे सहजमें, ताहीपर चित देय ॥ १ ॥

अब उसने यह दृढ़ निश्चय किया आजसे कभी हिंसा न करूंगा, दूसरेही दिनसे न्याययुक्त निर्वद्य व्योपार करने लग गया।

यह सर्व हाल उस पुरुषने बखूबी जान लिये।

वे दोनों पुरुष अपने कार्य करके उस नगरमें पहुँचे और राजसभामें जाकर अपने २ सर्व हाल कह सुनाये।

इसपर राजा बडा भारी शरमिन्दा हुआ और उस न्यायवान सेठका अत्यादर किया, कहनेका तात्पर्य यह है कि अन्यायका पैसा न्यायमें नहीं लगसक्ता।

ऐसा करनेसे दो तरहसे दोष आताहै प्रथम चोरीका दूसरा अन्यायका पैसा धर्ममें लगाना।

कोई ज्ञानी पुरुष चोरीमें सुख नहीं मानता स्थान २ पर चोरोंको दुःख होता है यही फरमाया है देखिये कहा है—

चौरोदुःखमुपैतिनारकसमं सत्योपितत्सन्निधेः ॥
शुष्के प्रज्वलिते हिंसार्प्रमपिकिंनो वन्हिनादह्यते॥
सद्योल लंठन सज्ञदग्धचरमग्रामेंऽग्नितप्तप्रजा ॥
मध्योत्पत्ति भवेसमं सगरजैः किं किं न लेमे तथा १॥

अर्थ—चोर नरकमें रहनेवाले नेरइयोंके सदृश दुःखको प्राप्त होते हैं और अन्य पुरुष भी जो कि उसके साथ रहे हैं,

दुःखको उठाते हैं जैसे सूखे वृक्षके साथ मिला वृक्षभी अग्निसे जलाया जाता है-चोरी करनेमें नाना प्रकारकी तकलीफें होती हैं-जब सर्व आदमियोंके लिये ग्राममें आग लगाई जाती है तब उस वक्त वहां रहनेवाले अग्निसे जलाई हुई प्रजा सगर पुत्रोंके बरोबर कौन २ कष्ट नहीं उठाती है।

इतने दुःख भोगने पर भी जो प्राणी चोरीको पसंद करते हैं वे बड़े दुःखी होते हैं।

भो आत्म हितचिन्तक ! इस अकृत्यसे हमेशा बचते रहना चाहिये।

चौर आदमी चाहे अपना मन मीठा करनेको थोड़े दिनोंके लिये खुश हो जावे मगर ज्यादे दिन ठहर नहीं सक्ता. कवि तुलसीदासजीने कहा है:-

दोहा।

चौरी करि होरी धरी, भई छिनकमें क्षार।
तुलसी माल हरामको, जात न लागे वार॥

इसका भावार्थ यह है कि लोग फाल्गुन महीनेमें जैसे चौरी वर करके होरीपर धरते हैं और क्षणमें नष्ट हो जाता ठीक वैसेही हरामके मालको जाते देर नहीं लगती।

फाल्गुन मासमें महा अज्ञानी लोग चाहे वृद्ध हो या बाल अन्य लोगोंके घरोंमेंसे कई एक वस्तुओंकी चोरी करके माल निकाल लाते है इतनाही नही बलके कई वख्त विचारे लोगोंकी कीमती वस्तुएँ जला देते हैं अफसोस ! सद अफसोस उन लोगोंको सिवाय "शरम" के दूसरा कुछ कहनाही गैरवाजिब है ।

आपको खुद अनुभव है कि जब इस तरहसे लोग चौरी करते हैं तो उस वख्त उनकी बुद्धि भी नष्ट हो जाती है कि सिवाय अप शब्दोंके कुछ बोलनाही नहीं वनता यह प्रताप उस चौरीका है ।

कितनेक लोग वचपनमें चौरी करना सीख जाते हैं और उस समय उनके माता पिताकी बेदरकारीके कारण विगड़ जाते है ।

वचपनमे अनभिज्ञ होनेसे घरमेंसे पैसा उठाकर ले जाता है और जब उसको माता पिता मोहवश "वह कहकर कि यह तो वच्चा है" कुछ नहीं कहते तो वह क्रमशः उस शोखमें पड जाता है और पुख्ती उम्रका होनेपर अन्य लोगोंके घरोंमें चौरी करना व डाका डालना सीख जाते है सबब वालकोंको शुरूसेही समझाये रखना चाहिये कि जिससे इस व्यसनमें ग्रस्त न हो ।

बड़े आदर्शी ठीक कहते हैं कि "भूखे मरना अच्छा मगर चौरी नहीं करना" सबब भो आत्माभिलाषी प्राणियां इस दुष्ट रिवाजको कभी पास न आने दो तथा अन्य लोग जो इसमें ग्रस्त ह्वों निकालने की कोशिस करो ताके तुमारा यह भव और परभव सर्व सुधर जायें।

सातवां व्यसन परस्त्री गमन।

इस व्यसनको सेवन करनेसे नाना प्रकारके दुःख प्राप्त ह्वोते है, कहा है:—

दोहा।

लाजघटे तुझ कुलतणी। घटे तहारूं ज्ञान ॥
आयुष्यने चैतन घटे। घटे जगतमें मान ॥ १ ॥

आप जानते है कि परस्त्री वहींतक स्वस्त्री सदृश रहती। जहांतककी पुरुषके पास द्रव्य हो, पैसा नहीं होनेकी हालतमें बड़ी दुर्दशा करती हैं कहा है—

कवित्त।

जबतक पैसा पास रहेगा। मीठी बात सुनावेगी ॥
कंगालीकी यार हालतमें। जूते मार निकालेगी ॥ १ ॥

परस्त्रीके प्रसंगसे रावणादि महान् राजाओंका भी विध्वन्स हुआ तो पामर प्राणियोंका तो कथनही क्या है ?

परस्त्रीको सेवन करनेवाला और उच्छिष्ट पदार्थको भक्षण करनवाला बरोबर है.

आपको मालुम है? कि लौकिकमें उच्छिष्ट पदार्थका कौन अधिकारी है; हां हा; मालुम हुआ उच्छिष्ट पदार्थोंके अधिकारी चांडाल लोगही हुआ करते हैं. तो क्यों सज्जनों! जब उच्छिष्ट भोजनके अधिकारी चांडाल लोग हैं तो ऐसी मल मूत्रसे भरी हुई दुर्गन्ध और अशुचि पदार्थके उच्छिष्ट भोक्ताको क्या पद (Title) निर्माण करना चाहिये? (उत्तर) नीच कृत्यके करनेवालेको महा चांडालकी पदवीही उनको शुशोभित हो सक्ती है.

हाय हाय! धिक्कार हो उन पुरुषोंको कि जो महा चांडाल और चांडालके शिरोमणी पदवीको धारण करनेपर भी अपने दुराचरणको नहीं छोड़ते, क्या दूसरेकी स्त्रीको भोग कर अपनी यश कीर्ति फैला सक्ते है, कदापि नहीं ठौर २ पर नीच दशाकोही प्राप्त होते हैं.

परस्त्रीके सेवन करनेवालेको चौथा मैथुन अव्रतके साथ का साथ तृतीय अदत्तादान अव्रतका भी प्रायश्चित्त लगता है कारण कि उसकी स्त्रीको बगैर उसके पतिके आज्ञाके भोगी जाती है.

दुनियामें दो बात बडीभारी मानी जाती है— १

दोहा

लाज जगतमें दोय वातकी । चोरी और अन्याई ॥
इसको सेवन करनेवाले । केवल दुर्गति पाई ॥१॥

परस्त्रीके सेवन करनेवालेको यह दोनों कलंक प्राप्त होते हैं, जिससे इस भवमें बड़ी दुर्दशा होती है तथा परभवमें नरक (Hail) प्राप्त होती है.

यदि आपने नरकका चित्र देखा हो तो मालुम होगा कि परस्त्री सेवन करनेवालेको जलते हुए स्थंभ पकड़वाये जाते हैं, जैसे उसने परस्त्रीको आलिंगन किया तैसेही उन स्थंभसे आलिंगन करवाया जाता है यहाँतक नहीं बल्कि भवोभवमें दुःखका भागी होता है कहा है—

मूढः परस्त्रियमुपेत्य कुवाक्यबंध
घातापकीर्तिमृतिदुर्गति दुःख पात्रम् ॥
स्यादूर्ध्व राज युवती रति दीर्घ पाप ।
लक्ष्म क्षयाविव विधोर्गुरु तल्पगस्य ॥१॥

अर्थ— मूर्ख पुरुष परस्त्रीका समागम करता है उससे अनेक प्रकारके दुर्वचन, बन्धन, दण्डादि प्रहार, अपयश मरना, दुर्गति और दुःखको प्राप्त होता है, जैसे कि गुरु स्त्रीका

संग करनेवाले चन्द्रमाको उसकी स्त्रीके संगतसे पापके वश कलंक और क्षय दशाकी प्राप्ति हुई।

परस्त्रीके सेवन करनेवालेको हमेशा भय बना रहता है कि इसके माता, पिता, भाई, सासु, सुसर, पति, देवर, जेष्ठ कुटुम्ब, परिवार, राजादि मुझको दुःख न दें, मेरी दुर्दशा न करदें मेरी इज्जत न ले लेवें, इस प्रकार दुःखोंके कारण अ... न्तर रोगोत्पत्ती होजाती है अर्थात् चिन्ता आकर निवास कर देती है जिससे वह प्रतिदिन दुःखित होता जाता है, चिन्ता एक ऐसी बीमारी है कि जिसकी औषधी (Medicine) धन्वन्तरि वैद्यके पास भी न थी इसलिये कहा है कि—

दोहा।

चिन्ता डाकन मन बसी, चुट चुट लोही खाय॥
रतिये रतिये संचरे, तोला तोला जाय॥ १॥

और भी कहा है—

दोहा

चिन्ता चिताका एक रस, इसमें अन्तर येह॥
चिता जलावे मृतकजन, चिन्ता जीवितदेह॥ १॥

जहांतक विचार किया जाता है यही विदित होता है कि परस्त्रीको सेवन करनेमें सर्वथा दुःखोंकी प्राप्ति है।

इसलिये—भो भव्य प्राणी ! इस महान घोर पापसे बचते रहिये जिससे व्यवहारिक और धार्मिक दोनोंही साधन बरोबर चलते रहैं ।

परस्त्री संग करनेवाले पुरुष अपनी कुल मर्यादाको त्याग कर दुष्ट कृत्य करते हैं उन्हें यह ज्ञान तक नहीं होता कि जिसे मैं दिलोजानसे चाहता हूं वह मुझको नही चाहती । देखिये महाराज भर्तृहरीने नीचे लिखे हुए वाक्यको विचारते हुए स्वपरस्त्रीको त्यागन करदी यथाः—

यांचितयामि सततं मयिसा विरात्का ।
साप्यन्यमिच्छतिजनं सजनोन्य सक्तः ॥
अस्मत् कृतेच परितुष्यति काचिदन्या ।
धिकृतांच तंच मदनं च इमां च मांच ॥

अर्थात्–जिस स्त्रीको (रानीको) मैं सच्चे दिलसे चाहता हूँ वह अन्य पुरुषसे प्रेमालिंगन करती है और वह पुरुष भी अन्य स्त्रीको चाहता है और वह अन्य स्त्री मुझे चाहतीहै इसलिये धिक्कार है रानीको, उस पुरुषको, उस स्त्रीको, मुझको और उस कामदेवको कि जिसके वशीभूत होकर जीव ऐसे अनर्थ करता है.

यदि आपको अपनी आत्मा सुधारना हो, स्वस्त्रीको वशमें कर पतिव्रता बनाना हो तो इस दुष्टनीका साथ त्याग-न करो.

जो पुरुष इस व्यसनके वश होजाते हैं वे अपनी स्त्रियोंको स्वयं बिगाड़ते हैं कारण कि जबकी वे परस्त्री गमन करेंगे और अपनी स्त्रीको दूर रक्खेंगे तो वह भी परपुरुषकी इच्छा करेगी सबब इस व्यसनको विषसम जानकर तत्काल छोड़ देना चाहिये.

इन सात व्यसनोंकी सामान्य व्याख्यासे आपको विदित होगया होगा कि इनके सेवन करनेसे कितने २ दुःख उठाना पड़ते हैं।

इतने दुःख होते हुए भी जो प्राणी इन व्यसनोंको सेवन करते हैं वे अपने सद्धर्म पर कुल्हाड़ा मारते हैं ऐसा समझना चाहिये नहीं बल्कि महामूढ अज्ञानी और चौरासीमें रखड़नेवाले समझना चाहिये ।

भो आत्मार्थि प्राणियों ! जब कि आपने बड़ेही कष्टसे यह रत्न चिन्तामणि मनुष्य भव पाया है तो क्यों कंकरकी तरह गुमाते हो वारम्वार ऐसा मौका नहीं मिलनेका आयुष्य की पल भरकी मालम नही क्यों नाहक कलंकोंसे गिरफ्तार

होते हो मनुष्यका परम कर्तव्य मोक्षमार्गका साधन है वह धन दौलत कुटुम्ब परिवार हाट हवेली और सांसारिक सुख सब यहींपर रह जावेगा।

देखिये छजलाणी वंशके कर्त्ता युवराज छजु कुमारजी फरमाते हैं—

कवित्त।

नंदनकी नव रही कौशलकी बीस रही।
रावणकी सब रही पीछे पछताओगे॥
उतते न लाये हाथ इतते न चले साथ।
इतहीका जोरी सोनी इतही गमाओगे॥
हय चीर घोड़ा हाथी काहुके न चले साथी।
बाटके बटाउ जैसे कलही उठ जाओगे॥
कहत है छजकुमार सुनो हो मायाके यार।
बँधी मुट्ठी आये थे पसार हाथ जाओगे॥

इसलिये भो मोक्षाभिलाषी! इन महादुःखके दाता दुष्ट अकृत्योंको दूरकर प्रति दिवस सुकृत्य कीजियेगा और अनुक्रमसे शुभ भावना भाते हुए शिवपुर (मोक्ष) में विराजकर अनत सुखमें लवलीन हो जाइयेगा ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सर्व मङ्गलंमाङ्गल्यम् । सर्व कल्याण कारणम् ॥
प्रधानंसर्वधर्माणाम् । जैनंजयतिशासनम् ॥ १ ॥

॥ ॐ ॥

(वीर पुत्र आनन्दसागरजी कृत.)

श्री वीतरागायनम् ॥

चन्द्र प्रभुसुनो वीनती । अरज
करूंकरजोड–जिनेश्वर–चन्द्र.टेक०

केकड़ी नगर बिराजिया । दिव्य देवालय
मांय-जिनेश्वर ॥ गुण अनंता दीपिया ।
शोभा वर्णिनजाय- जिनेश्वर-चन्द्र० ॥ १ ॥

दर्शनकर दिल हर्षिया । आनन्द अङ्गन
माय-जिनेश्वर ॥ जीव अनन्ता तारिया ।
मुझकों बेग बुलाय-जिनेश्वर-चन्द्र० ॥ २ ॥

आप कृपासें सुख किया । त्रैलोक्यसागर
गुरुराय-जिने०॥ श्रीसंघ क्लेश मिटाड़िया ।
अब आगे नवी थाय जिनेश्वर चन्द्र ॥ ३ ॥

इण विधि गुरु पच्चक्खाग दिखाया ।
षट् साखें दी मिलाय-जिनेश्वर ॥
विनयवान् श्रावत शिर धारया '
वरत्या जय २ कार्य-जिने० चन्द्र० ॥ ४ ॥

जैनश्वेताम्बर पाठशालाया । उत्तम
नाम कमाय-जिने० ॥ दिन द्विगुनी
रात चौगुनी वढ़ैया । देव गुरू सुपसाय
जिनेश्वर-चन्द्र० ॥ ५ ॥

वीर चौवीस्सें उन्नचालीस छाया ।
पौष शुक्ला मनभाय-जिनेश्वर ॥
केकड़ी क्षेत्रमें ठाठ मचाया । शुभदशमी
के मांय-जिनेश्वर-चन्द्र० ॥ ६ ॥

दास आनन्द गुण प्रभुका गाया ।
चरणों में शीश नमाय-जिनेश्वर० ॥
मैं तो अबलग कछु नहीं मांग्या ।
केवल ज्ञान शिवाय-जिने०चंद्र ॥७॥

ANAND SAGAR

॥ ॐ ॥

(वीर पुत्र आनन्दसागरजी कृत.)

॥ श्रीजिनकुशलगुरुभ्यो नमः ॥

गुरुभक्तिपर स्तवन

———o———

सुनो सुनो कुशल गुरु प्यारा।

तुम जीवन नाथ हमारा ॥ टेक ॥

मैं दर्शन करने आया।

मुझ आनन्दने न समाया ॥सुनो० ॥ १ ॥

मैं अष्ट कर्ममें रमिया।

मैं भव २ दुःखमें भमिया ॥सुनो० ॥ २ ॥

तुम वहु जियानें तारचा।

तुम वहु उपकार वताया ॥सुनो० ॥ ३ ॥

मै दीन शरण तुझ आया।

शुभ भावना दिलमें भाया ॥सुनो० ॥ ४ ॥

वीर सम्वत् अति मन भाया।

चौवीसो अडतीस छाया ॥ सुनो० ॥ ५ ॥

वैशाख पुर्णिमा ध्याया।

भानुपुर ठाठ मचाया ॥ सुनो० ॥ ६ ॥

तुझदास आनन्द गुण गाया।

सुख संपत्ति सवहीं पाया ॥ सुनो० ॥ ७ ॥

आनंद सागर

॥ इति शुभम् ॥